तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मंगलाचरण

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीति

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥

अर्थ—[नामस्थापनाद्रव्यभावतः] नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव से [तत् न्यासः] उन सात तत्त्वों तथा सम्यग्दर्शनादि का लोकव्यवहार होता है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - सूत्र का प्रयोजन

- वक्ता के मुख से निकले हुए शब्द की अपेक्षा को लेकर भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं।
- उन अर्थों में व्यभिचार (दोष) न आए और सच्चा अर्थ कैसे हो, यह बताने के लिए यह सूत्र कहा है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - निक्षेप की व्याख्या

- पदार्थों के भेद को न्यास अथवा निक्षेप कहा जाता है।
- प्रमाण और नय के अनुसार प्रचलित हुए लोकव्यवहार को निक्षेप कहते हैं।
- ज्ञेयपदार्थ अखण्ड है, तथापि उसे जानने पर, ज्ञेयपदार्थ के जो भेद (अंश; पहलू) किए जाते हैं, उसे निक्षेप कहते हैं।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - निक्षेप के भेद

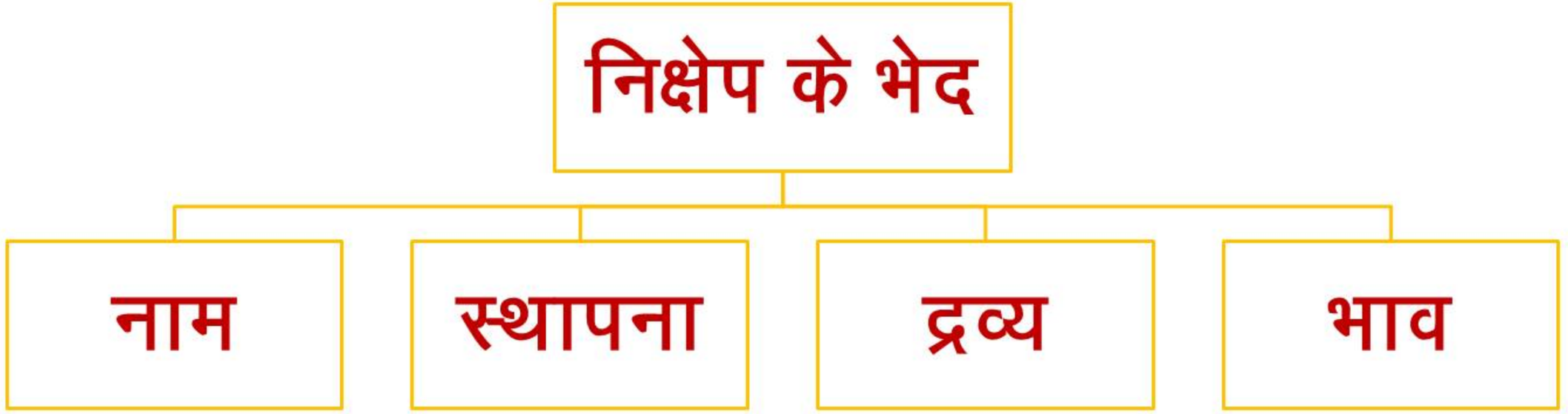

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - नामनिक्षेप

- गुण, जाति या क्रिया की अपेक्षा किए बिना, किसी का यथेच्छ नाम रख लेना, सो नामनिक्षेप है।
- जैसे, किसी का नाम 'जिनदत्त' रखा, किन्तु वह जिनदेव के द्वारा दिया हुआ नहीं है तथापि लोकव्यवहार (पहचानने) के लिए उसका 'जिनदत्त' नाम रखा गया है।
- एकमात्र वस्तु की पहिचान के लिए उसकी जो संज्ञा रख ली जाती है, उसे नामनिक्षेप कहते हैं।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - स्थापनानिक्षेप

- किसी अनुपस्थित (अविद्यमान) वस्तु का, किसी दूसरी उपस्थित वस्तु में सम्बन्ध या मनोभावना को जोड़कर आरोप कर देना कि 'यह वही है' सो ऐसी भावना को **स्थापना** कहा जाता है।
- जहाँ ऐसा आरोप होता है, वहाँ जीवों के ऐसी मनोभावना होने लगती है कि 'यह वही' है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - स्थापनानिक्षेप के प्रकार

स्थापनानिक्षेप के प्रकार

- तदाकारस्थापना
- अतदाकारस्थापना

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - द्रव्यनिक्षेप

- भूत और भविष्यत् पर्याय की मुख्यता को लेकर, उसे वर्तमान में कहना-जानना, सो द्रव्यनिक्षेप है।
- जैसे, श्रेणिक राजा, भविष्य में तीर्थङ्कर होंगे, उन्हें वर्तमान में तीर्थङ्कर कहना-जानना।
- और भूतकाल में हो गए भगवान महावीरादि तीर्थङ्करों को, वर्तमान तीर्थङ्कर मानकर स्तुति करना, सो द्रव्यनिक्षेप है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - भावनिक्षेप

- केवल वर्तमान पर्याय की मुख्यता से जो पदार्थ वर्तमान जिस दशा में है, उसे उस रूप कहना-जानना सो भावनिक्षेप है।
- जैसे, सीमन्धर भगवान वर्तमान तीर्थङ्कर के रूप में महाविदेह में विराजमान हैं, उन्हें तीर्थङ्कर कहना-जानना।
- और भगवान महावीर वर्तमान में सिद्ध हैं, उन्हें सिद्ध कहना-जानना सो भावनिक्षेप है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - दृष्टांत

- जहाँ 'सम्यग्दर्शनादि' या 'जीवाजीवादि' शब्दों का प्रयोग किया गया हो, वहाँ कौन सा निक्षेप लागू होता है, सो निश्चय करके जीव को सच्चा अर्थ समझ लेना चाहिए।

- सूत्र १ में 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि' तथा 'मोक्षमार्गः', यह शब्द तथा सूत्र २ में सम्यग्दर्शन, यह शब्द भावनिक्षेप से कहा - ऐसा समझना चाहिए।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - सूत्र का सिद्धान्त

- भगवान के नामनिक्षेप और स्थापनानिक्षेप, शुभभाव के निमित्त हैं; इसलिए व्यवहार हैं।
- द्रव्यनिक्षेप निश्चयपूर्वक व्यवहार होने से, अपनी शुद्धपर्याय थोड़े समय के पश्चात् प्रगट होगी, यह सूचित करता है।
- भावनिक्षेप निश्चयपूर्वक अपनी शुद्धपर्याय होने से धर्म है, ऐसा समझना चाहिए।
- निश्चय और व्यवहारनय का स्पष्टीकरण, इसके बाद के सूत्र की टीका में किया है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ५

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि का उपाय	६	१

निश्चयसम्यग्दर्शनादि का उपाय

प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥

अर्थ—सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्वों का [अधिगमः] ज्ञान, [प्रमाणनयैः] प्रमाण और नयों से होता है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सूत्र का स्पष्टीकरण

सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्व [सूत्र १-४]

निक्षेप [सूत्र ५] — का अधिगम अर्थात् ज्ञान अर्थात् जानना [सूत्र ६]

- प्रमाण
- नय

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - प्रमाण का स्वरूप

- सच्चे ज्ञान को—निर्दोष ज्ञान को, अर्थात् सम्यग्ज्ञान को प्रमाण कहते हैं।
- अनन्त गुणों या धर्म का समुदायरूप अपना तथा परवस्तु का स्वरूप, प्रमाण द्वारा जाना जाता है।
- प्रमाण, वस्तु के सर्वदेश को (सर्व पहलुओं को) ग्रहण करता है, जानता है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - नय का स्वरूप

- प्रमाण द्वारा निश्चित हुई वस्तु के एकदेश को जो ज्ञान ग्रहण करता है, उसे नय कहते हैं।
- जो प्रमाण द्वारा निश्चित हुए अनन्त धर्मात्मक वस्तु के एक-एक अङ्ग का ज्ञान मुख्यता से कराता है, सो नय है।
- वस्तुओं में अनन्त धर्म हैं; इसलिए उनके अवयव अनन्त तक हो सकते हैं और इसलिए अवयव के ज्ञानरूप नय भी अनन्त तक हो सकते हैं।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - नय का स्वरूप

- श्रुतप्रमाण के विकल्प, भेद या अंश को नय कहते हैं।
- श्रुतज्ञान में ही नयरूप अंश होता है।
- जो नय है, वह प्रमाणसापेक्षरूप होता है।
- मति, अवधि, मनःपर्यय, और केवलज्ञान में नय के भेद नहीं होते।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

प्रमाण - वस्तु का सर्वांग जानता हुआ ज्ञान - अनेकान्त ज्ञान

अनेकान्तमय वस्तु

नय - वस्तु का एकदेश जानता हुआ ज्ञान - एकान्त ज्ञान

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

- अनेकान्त = [अनेक + अन्त] = अनेक धर्म
- एकान्त = [एक + अन्त] = एक धर्म

अनेकान्तमय वस्तु	अनेकान्त	एकान्त
सम्यक्	सम्यक् अनेकान्त [प्रमाण]	सम्यक् एकान्त [नय]
मिथ्या	मिथ्या अनेकान्त [प्रमाणाभास]	मिथ्या एकान्त [नयाभास]

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् अनेकान्त का स्वरूप

- प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगमप्रमाण से अविरुद्ध एक वस्तु में जो अनेक धर्म हैं, उन्हें निरूपण करने में जो तत्पर है, सो सम्यक्-अनेकान्त है।
- प्रत्येक वस्तु निजरूप से है और पर रूप से नहीं।
- आत्मा, स्व-स्वरूप से है, पर-स्वरूप से नहीं।
- पर उसके स्वरूप से है और आत्मा के स्वरूप से नहीं।
- इस प्रकार जानना सो सम्यक्-अनेकान्त है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - मिथ्या अनेकान्त का स्वरूप

- जो तत्-अतत् स्वभाव की मिथ्या कल्पना की जाती है, सो मिथ्या अनेकान्त है।
- जीव अपना कुछ कर सकता है और दूसरे जीवों का भी कर सकता है - इसमें जीव का निज से और पर से - दोनों से तत्पना हुआ; इसलिए वह मिथ्या-अनेकान्त है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त के दृष्टान्त १

- आत्मा, निजरूप से है और पररूप से नहीं, ऐसा जानना सो सम्यक्-अनेकान्त है।
- आत्मा, निजरूप से है और पररूप से भी है, ऐसा जानना सो मिथ्या अनेकान्त है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त के दृष्टान्त २

- आत्मा, अपना कुछ कर सकता है, शरीरादि पर वस्तुओं का नहीं कर सकता – ऐसा जानना सो **सम्यक्-अनेकान्त** है।
- आत्मा, अपना कर सकता है और शरीरादि पर का भी कर सकता है, ऐसा जानना सो **मिथ्या-अनेकान्त** है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त के दृष्टान्त ३

- आत्मा के शुद्धभाव से धर्म होता है और शुभभाव से नहीं होता, ऐसा जानना सो **सम्यक्-अनेकान्त** है।
- आत्मा के शुद्धभाव से धर्म होता है और शुभभाव से भी होता है, ऐसा जानना सो **मिथ्या-अनेकान्त** है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त के दृष्टान्त ४

- निश्चयस्वरूप के आश्रय से धर्म होता है और व्यवहार के आश्रय से नहीं होता, ऐसा जानना सो **सम्यक्-अनेकान्त** है।
- निश्चयस्वरूप के आश्रय से धर्म होता है और व्यवहार के आश्रय से भी होता है, ऐसा समझना, सो **मिथ्या-अनेकान्त** है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त के दृष्टान्त ५

- निश्चयसम्यग्दर्शन प्रगट करने के बाद स्वावलम्बन के बल से जितना अंश व्यवहार का (- पराश्रय का) अभाव होता है, उतना अंश निश्चय (- शुद्धपर्याय) प्रगट होता है, ऐसा समझना, सो **सम्यक् अनेकान्त है।**
- व्यवहार के करते-करते निश्चय प्रगट हो जाता है, ऐसा समझना, **सो मिथ्या अनेकान्त है।**

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त के दृष्टान्त ६

- आत्मा को अपनी शुद्ध क्रिया से लाभ होता है और शारीरिक क्रिया से हानि-लाभ नहीं होता, ऐसा जानना सो **सम्यक्-अनेकान्त** है।
- आत्मा को अपनी शुद्ध क्रिया से लाभ होता है और शारीरिक क्रिया से भी लाभ होता है, ऐसा मानना सो **मिथ्या-अनेकान्त** है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त के दृष्टान्त ७

- एक (प्रत्येक) वस्तु में सदा स्वतन्त्र वस्तुत्त्व को सिद्ध करनेवाली परस्पर दो विरोधी शक्तियों [सत्-असत्; तत्-अतत्; नित्य-अनित्य; एक-अनेक इत्यादि] को प्रकाशित करे, सो **सम्यक्-अनेकान्त** है।
- एक वस्तु में दूसरी वस्तु की शक्ति को प्रकाशित करके, एक वस्तु, दो वस्तुओं का कार्य करती है - ऐसा मानना सो **मिथ्या-अनेकान्त** है; अथवा स यक्-अनेकान्त से वस्तु का जो स्वरूप निश्चित है, उससे विपरीत वस्तुस्वरूप की कल्पना करके, जो उसमें न हो, वैसे स्वभावों की कल्पना करना सो **मिथ्या-अनेकान्त** है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या अनेकान्त के दृष्टान्त ८

- जीव अपने भाव कर सकता है और पर वस्तु का कुछ नहीं कर सकता - ऐसा मानना सो **सम्यक्-अनेकान्त** है।
- जीव, सूक्ष्म पुद्गलों का कुछ नहीं कर सकता, किन्तु स्थूल पुद्गलों का कर सकता है - ऐसा जानना सो **मिथ्या-अनेकान्त** है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या एकान्त का स्वरूप

- निजस्वरूप से अस्तिरूपता और पररूप से नास्तिरूपता-आदि वस्तु का जो स्वरूप है, उसकी अपेक्षा रखकर प्रमाण के द्वारा ज्ञात पदार्थ के एकदेश को (एक पहलू को) विषय करनेवाला नय, **सम्यक्-एकान्त** है।
- और किसी वस्तु के एक धर्म का निश्चय करके, उस वस्तु में रहनेवाले अन्य धर्मों का निषेध करना सो **मिथ्या-एकान्त** है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या एकान्त के दृष्टान्त १

- 'सिद्ध भगवन्त एकान्त सुखी हैं'-ऐसा जानना सो सम्यक् एकान्त है, क्योंकि 'सिद्ध जीवों को बिलकुल दुःख नहीं है' यह बात गर्भितरूप से उसमें आ जाती है।
- और सर्व जीव एकान्त सुखी हैं - ऐसा जानना सो मिथ्या-एकान्त है, क्योंकि अज्ञानी जीव वर्तमान में दुःखी हैं, उसका निषेध होता है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६।। - सम्यक् और मिथ्या एकान्त के दृष्टान्त २

- 'सम्यग्ज्ञान, धर्म है'—ऐसा जानना सो **सम्यक्-एकान्त** है, क्योंकि 'सम्यग्ज्ञान-पूर्वक वैराग्य होता है' - यह गर्भितरूप से उसमें आ जाता है।
- सम्यग्ज्ञानरहित 'त्यागमात्र, धर्म है' - ऐसा जानना सो **मिथ्या-एकान्त** है, क्योंकि वह स यग्ज्ञानरहित होने से मिथ्या त्याग है।

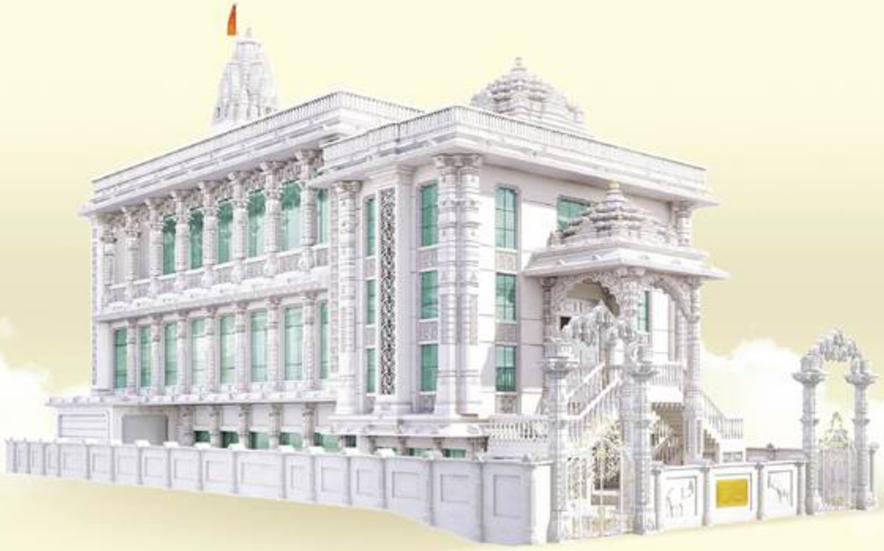

जिनवाणी स्तुति